बेसहारों का सहारा बनें – प्रो . अच्युत सामंत

वर्ष 2016 अलविदा होने को आ गया। इस दौरान दुनिया में बहुत सारे परिवर्तन हुए। भारतीय योग और अध्यात्म का आधिपत्य निश्चित रूप से पूरी दुनिया में स्थापित हुआ। लेकिन सबसे अधिक दुःख की बात यह रही कि हम सब आवश्यकता से अधिक भौतिकतावादी बन गये। हमने आँख मूँदकर पाश्चात्य का अंधाधुंध अनुसरण किया। अपने भारतीय संस्कार एवं संस्कृति के संरक्षण की ओर ध्यान कम दिया। हमने भारतीयता के शाश्वत जीवन मूल्यों को अपनाने की दिशा में कम ध्यान दिया। ऐसे में कीट–कीस के संस्थापक डॉ. अच्युत सामंत का मानना है कि 2017 वर्ष को एक संकल्प वर्ष के रूप में मनाया जाये। समस्त भारतवासी पहले एक नेक और अच्छा इंसान बनने का संकल्प लें! बेसहारों का सहारा बनने का संकल्प लें! अपनी नकारात्मक सोच को बदलें और सकारात्मक सोच का सहारा लेकर निःस्वार्थ समाजसेवा में अपने आपको लगायें। डॉ. सामंत मानते हैं कि यह काम बहुत कठिन जरूर है, लेकिन हम सब के पास दृढ़ संकल्प शक्ति है, जिसके बल पर यह काम बहुत ही सरल और आसान होगा।

डॉ. अच्युत सामंत जी का व्यक्तिगत जीवन इसका प्रत्यक्ष प्रमाण है। डॉ. सामंत आज विश्व के महान शिक्षाविद् हैं। त्यागी, तपस्वी, मनीषी और वास्तविक संन्यासी हैं। डॉ. सामंत पूरी तरह से राजा जनक की तरह एक विदेह जीवन जीते हैं अर्थात् समस्त सांसारिक सुख–सुविधाओं के बावजूद भी सादा जीवन जीते हैं। उच्च विचार रखते हैं। समाज के सबसे उपेक्षित समुदाय आदिवासी समुदाय के बच्चों के सर्वांगीण विकास के लिए तन, मन और धन से लगे रहते हैं। उत्कृष्ट शिक्षा के माध्यम से बड़े ही निःस्वार्थ भाव से उनकी दिन–रात सेवा करते हैं। उनके व्यक्तित्व का विकास कर उनको समाज की मुख्यधारा के साथ जोड़ते हैं। इसी में वे अपने मानव जीवन को सार्थक समझते हैं। 'कलिंग इंस्टीट्यूट ऑफ सोशल साइंसेज' (कीस) के 25 हजार आदिवासी बच्चे भी ऐसे हैं कि वे भी डॉ. सामंत को अपना रोल मॉडल मानकर उनके संत स्वभाव का अनुसरण करते हैं। डॉ. सामंत बच्चों को सिर्फ एक ही संदेश देते हैं कि बच्चे उनकी तरह ही सरल, मृदुल, हँसमुख, उदार और एक अच्छा इंसान बनें। बेसहारों का सहारा बनें।

अभी हाल ही में डॉ. अच्युत सामंत को जैसे ही यह पता चला कि ओडिशा की एक महिला फुटबाल खिलाड़ी रेशमा बेगम बेसहारा बनकर अपने परिवार की परवरिश के लिए दर–दर भटक रही हैं, उसको कोई सहारा नहीं दे रहा तो 26 नवंबर, 2016 को डॉ. सामंत ने रेशमा बेगम को कीस में बुलाकर उसे कीस फुटबाल टीम का कोच बना दिया। अपने हाथों से उन्होंने रेशमा बेगम को नियुक्ति पत्र एवं कोच की जर्सी भेंट की। ओडिशी की कला, संस्कृति, साहित्य, शिक्षा, स्वास्थ्य एवं खेल आदि के विकास से पूरी तरह से जुड़े विदेह डॉ. सामंत

सकारात्मक सोच के एक धनी व्यक्तित्व हैं। उन्होंने 31 वर्षीया रेशमा बेगम के अतीत की वास्तविक जानकारी ली। लगातार 12 वर्षों तक ओडिशा की एक बेस्ट महिला फटबालर के रूप में रेशमा बेगम ने अपनी साख बनाये रखी। फरवरी 1999 में मणिपुर में आयोजित पाँचवें नेशनल गेम से अपनी खेल प्रतिभा आरंभ करने वाली रेशमा ने अपने 12 वर्षों के खेल कैरियर में कभी भी पीछे मुड़कर नहीं देखा। सीनियर महिला चैंपियनशिप से लेकर फेडरेशन कप और सिंगापुर में आयोजित महिला फुटबाल टूर्नामेंट आदि में भी रेशमा ने एक बेहतरीन महिला फुटबालर के रूप में अपना जौहर दिखाया। उन सब असाधारण उपलब्धियों को ध्यान में रखकर उसकी आर्थिक हालात से उबारने के लिए उसे कीस का कोच बनाया। रेशमा बेगम के लिए डॉ. अच्युत सामंत एक मसीहा हैं। डॉ. अच्युत सामंत का यह भी मानना है कि दुनिया सदा अच्छों का मान–सम्मान करती है। हम आशा करते हैं कि रेशमा बेगम कीस के बच्चों को अपने जैसा प्रतिभावान फुटबालर बनाएंगी।

जय जगन्नाथ!